उपस्थिति को देखते हुए दुर्योधन का विश्वास है उसकी विजय पूर्ण रूप से निश्चित है।

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि।।११।।

अयनेषु=सामरिक महत्त्व के स्थलों पर; **च**=तथा; **सर्वेषु**=सब; **यथा-भागम्**=अपने-अपने; **अवस्थिताः**=स्थित रहते हुए; **भीष्मम्**=पितामह भीष्म को; **एव**=ही; **अभिरक्षन्तु**=सहयोग दें; **भवन्तः**=आप; **सर्वे एव**=सभी; **हि**=निःसन्देह।

अनुवाद

अतएव सैन्य-व्यूह में सामरिक महत्त्व के अपने-अपने स्थानों पर स्थित रहते हुए आप सभी पितामह भीष्म से पूरा सहयोग करें।।११।।

तात्पर्य

पितामह भीष्म के शौर्य की स्तुति करके दुर्योधन ने विचार किया कि अन्य योद्धा कहीं यह न समझ लें कि उन्हें यथोचित सम्मान नहीं दिया गया। अतः अपनी स्वाभाविक कूटनीति के अनुरूप, स्थिति की उचित व्यवस्था के लिए उसने ये वचन कहे। उसके कहने का अभिप्राय था कि यद्यपि भीष्मदेव निःसन्देह सर्वोत्तम योद्धा हैं, परन्तु वे अब अति वृद्ध हो चुके हैं; इसलिए सब योद्धा सम्पूर्ण दिशाओं से उनकी विशेष रक्षा करने को उद्यत रहें। युद्ध की किसी एक दिशा में भीष्म की पूर्ण व्यस्तता का शत्रु अनुचित लाभ उठा सकता है। अतः यह नितान्त आवश्यक है कि दूसरे योद्धा व्यूह में अपने-अपने स्थलों पर स्थित रहकर शत्रु को व्यूहरचना भंग न करने दें। दुर्योधन का निश्चित मत था कि कौरवों की विजय पूर्ण रूप से युद्ध में भीष्म की उपस्थिति पर निर्भर करती है। उसे युद्ध में भीष्म तथा द्रोण से पूर्ण सहयोग की आशा थी। वह जानता था कि जब द्रौपदी को भरी सभा में वस्त्र-हरण कर नग्न किया जा रहा था, तब उस असहाय अवस्था में उसने उन दोनों से न्याय की याचना की; किन्तु वे मूक बने बैठे रहे। यह जानते हुए भी कि उसके दोनों सेनाधिपतियों (भीष्म-द्रोण) का पाण्डवों के प्रति स्नेहभाव है, दुर्योधन को पूरा विश्वास है कि वे अब फिर उस स्नेह को उसी भाँति पूर्ण रूप से त्याग देंगे, जैसा उन्होंने द्यूतक्रीड़ा के अवसर पर किया था।

तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखं दध्मौ प्रतापवान्।।१२।।

तस्य=उसका; **संजनयन्**=वर्धन करते हुए; **हर्षम्**=हर्ष का; **कुरुवृद्धः**=कुरुवंश के वयोवृद्ध (भीष्म); **पितामहः**=पितामह भीष्म ने; **सिंहनादम्**=सिंह की गर्जना के समान; **विनद्य**=गरज कर; **उच्चैः**=उच्च स्वर में; **शंखम्**=शंख; **दध्मौ**=बजाया; **प्रतापवान्**=बलशाली।

अनुवाद

इस प्रकार द्रोणाचार्य से कहे दुर्योधन के इन वचनों को सुनकर कौरवों के